Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 01, August, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2020 आधारित विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिभावकों का प्रत्यक्षण

अभिषेक कुमार बाजपेई
शोधार्थी
श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी गजरौला (उ0प्र0)
E-Mail:- abhishekbajpai75@gmail.com

डॉ0 मनोज कुमार मिश्र (सहायक आचार्य)
शोध-निर्देशक
श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी गजरौला (उ0प्र0)

सारांश

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2020 (एनसीएफ 2020) पर आधारित विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण सकारात्मक और उत्साहजनक देखा जा रहा है। अधिकांश अभिभावकों का मानना है कि इन नई पुस्तकों में बच्चों की जिज्ञासा, खोज की प्रवृति और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए रोचक व व्यवहारिक गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। वे इस बात से संतुष्ट हैं कि पाठ्यपुस्तकों की भाषा सरल, स्पष्ट और बच्चों की उम्र के अनुसार उपयुक्त है, जिससे छात्र विषय को सहजता से समझ पा रहे हैं। साथ ही पुस्तकों में स्थानीय परिवेश, जीवन से जुड़ी घटनाएँ और चित्रों का समावेश बच्चों को विज्ञान से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो रहा है। हालांकि, कुछ अभिभावक डिजिटल संसाधनों और अभ्यास की अधिकता को लेकर चिंतित भी हैं, लेकिन कुल मिलाकर उनका मानना है कि यह नई रूपरेखा भविष्य की शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुख्य शब्द:- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2020, विज्ञान पाठ्यपुस्तक, प्रत्यक्षण।*

प्रस्तावना :-

संसार के प्रत्येक शिक्षाविद् ने शिक्षा के लक्ष्यों के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण होते हुए भी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिक विकास ही माना है, साथ ही शिक्षा को सामाजिक विकास का भी मुख्य साधन भी स्वीकार किया है। शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति समाज, वातावरण आदि का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् रेमॉण्ट ने लिखा है- ‘‘शिक्षा उस विकास का नाम है जो शैशव अवस्था से प्रौढ अवस्था तक होता ही रहता है।’’ अर्थात् शिक्षा वह क्रम है जिससे मानव अपने को आवश्यकतानुसार भौतिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।’’ प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं विचारक जॉन पारंकमलिल ने लिखा है- ‘‘शिक्षा एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे या वयस्क ज्ञान, अनुभव, कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त करता हैं। यह व्यक्तिगत रूप से सभ्य, परिष्कृत, सुसंस्कृत और शिक्षित बनाती हैं। एक सभ्य और सामाजिक समाज के लिए शिक्षा एकमात्र साधन हैं। इसका लक्ष्य एक व्यक्ति को परिपूर्ण बनाना है। हर

Author:- Abhishek Kumar Bajpai
Email:- abhishekbajpai75@gmail.com
Received:- 03 May, 2025;
Accepted:- 19 May, 2025.
Available online:- 30 May, 2025
Published by JSSCES, Bareilly

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

समाज शिक्षा को महत्व देता है क्योंकि यह सभी बुराइयों के लिए एक अचूक समाधान है। यह जीवन की विभिन्न समस्याओं को हल करने की कुंजी है।''

शिक्षा का अर्थ :-

शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा के बारे में अनेक मत प्रचलित हैं। इस संबंध में विभिन्न विचारकों, दार्शनिकों, शिक्षा-शास्त्रियों, धर्म-प्रचारकों, अध्यापकों, विशेषज्ञों ने अपने अलग-अलग विचार व्यक्त किए है। शिक्षा शब्द का प्रयोग अनेक भाषा एवं अर्थो में किया गया हैं। ''शिक्षा शब्द संस्कृत की ''शिक्ष'' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- सीखना और सिखाना। सीखने के अर्थ में प्रायः शिक्षा प्राप्त करना और सिखाने के अर्थ में शिक्षा प्रदान करना हैं। हिन्दी में एक अन्य प्रचलित शब्द है- विद्या। विद्या संस्कृत भाषा का शब्द है और यह ''विद्'' धातु से बना है। ''विद्'' के पाँच अर्थ ज्ञान, वास्तविकता, उपलब्धि, विचारण और श्रेष्ठ भावनाएँ है। प्राचीन काल में विद्या शब्द इन पाँचों अर्थों में प्रयुक्त होता था और पाँचों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व भी है।'' ''शिक्षा का अंग्रेजी प्रयोग 'एजूकेशन' लैटिन भाषा के एडुकेटम या एडुकेयर से निकला है। एडुकेटम में दो शब्द है 'ए' और 'डूको'। 'ए' का अर्थ है अन्दर से और 'डूको' का अर्थ है बाहर लाना। 'एडुकेयर' का अर्थ है- पालन-पोषण करना, संवर्धन करना या पथ-प्रदर्शन करना। हिन्दी और अंग्रेजी-दोनों व्युत्पत्तियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।''

शिक्षा में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का महत्वः- शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन पाठ्यक्रम माना जाता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53 ने पाठ्यक्रम के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है- ''पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं हैं, जो विद्यालय में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, अपितु इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती हैं, जिनको बालक विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशॉप तथा खेल के मैदान एवं शिक्षकों और विद्यार्थियों के अनगिनत अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम बन जाता है, जो विद्यार्थियों के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है तथा उनके विकास में सहायता दे सकता है।''

''शिक्षा को एक त्रिमुखी प्रक्रिया माना जाता है, जिसके तीन महत्वपूर्ण अंग में शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।'' शिक्षा के तीन अंगों में पाठ्यक्रम का विशेष महत्व है। पाठ्यक्रम के संगठन के विषय में भी विभिन्न दृष्टिकोणों के कारण पाठ्यक्रम के भी अनेक प्रकार होते है, जैसे-विषय-केन्द्रित पाठ्यक्रम, अनुभव-केन्द्रित पाठ्यक्रम, कार्य-केन्द्रित पाठ्यक्रम, बाल-केन्द्रित, शिल्पकला, सुसम्बद्ध तथा कोर-केन्द्रित पाठ्यक्रम।

विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953) की अनुशंसाएँ:-

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953) ने माध्यमिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य, विज्ञान पाठ्यक्रम, प्रशासन आदि की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया। आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को अत्यन्त संकुचित,

पुस्तकीय, सैद्धान्तिक, बोझिल, अमनोवैज्ञानिक तथा परीक्षा केन्द्रित बताया था। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यपुस्तकों के स्तर को ऊँचा करने तथा इनके लेखन एवं प्रकाशन हेतु एक पाठ्यपुस्तक मंडल बनाने की सिफारिश की। आयोग ने न्यूनतम तीन साल के अन्तराल के बाद पुस्तकों में संशोधन करने का सुझाव दिया।

विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी कोठारी कमीशन की अनुशंसाएँ (1964-66) :-

1964 में विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को नया आकार व नयी दिशा देने के उद्देश्य से कोठारी आयोग का गठन किया गया। आयोग ने भारतीय विद्यालयी शिक्षा की गहन समीक्षा प्रस्तुत की जो भारत के शिक्षा के इतिहास में आज भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण अध्ययन माना जाता है। कोठारी आयोग या राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, भारत का ऐसा पहला शिक्षा आयोग था, जिसने अपनी रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिए।

आयोग ने पाठ्यचर्या पर एक टास्क फोर्स का गठन किया। आयोग ने माध्यमिक स्तर पर विज्ञान पाठ्यचर्या के संबंध में माना कि इस स्तर पर विज्ञान एक मानसिक अनुशासन तथा उच्च स्तर की प्रांरभिक तैयारी के रूप में होना चाहिए। परिचयात्मक विषय पर व्यापक क्षेत्रों को सम्मिलित करने के लिए भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और पृथ्वी विज्ञान अनिवार्य विषय के रूप में होने चाहिए।

विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की अनुशंसाएँ (1968):-

रिपोर्ट में माध्यमिक शिक्षा के उपयोग पर जोर दिया गया तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पुनर्गठन तथा शिक्षा के स्तर में सुधार की बात कही गयी। माध्यमिक शिक्षा को विज्ञान की अलग-अलग भूमिकाओं, मानविकी व समाज विज्ञान के लिए एक उपयुक्त मंच माना गया। ‘‘रिपोर्ट में पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार करने तथा प्रोत्साहन व पारिश्रमिक की उदार नीति के माध्यम से सबसे अच्छे लेखन प्रतिभा को आकर्षित करने की बात कही गयी। तत्काल कदम विद्यालयों के लिए उच्च गुणवत्ता की पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन के लिए लिया जाना चाहिए और पाठ्यपुस्तकों में लगातार परिवर्तन से बचना चाहिए और उनकी कीमतें भी कम हो, ताकि साधारण साधन वाले छात्र भी उन्हें खरीद सके।’’ वाणिज्यिक तर्ज पर स्वायत्ता पुस्तक निगमों को स्थापित करने की संभावना की जाँच की जानी चाहिए, वहीं देशभर में कुछ आम पाठ्यपुस्तकों के लिए बुनियादी प्रयास किए जाने चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1975) की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी अनुशंसाएँ:-

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1975) ने रेखांकित किया कि पाठ्यक्रम राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, उत्पादन, समाज में आधुनिकीकरण, सहज और आध्यात्मिक मूल्यों के निर्माण में योगदान प्रदान करने वाला होना चाहिए। ‘‘इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यालयी शिक्षा में दसवीं कक्षा तक विज्ञान और गणित को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होना चाहिए।’’ विज्ञान व गणित का स्तर

सुधारना होगा ताकि बच्चों को आधुनिक ज्ञान दिया जा सके, उनकी जिज्ञासा बढ़ाई जा सके, उन्हे खोज की वैज्ञानिक विधि बताई जा सके और उन्हे परिवर्तनशील समाज और संस्कृति में स्पर्धापूर्वक भाग लेने के लिए तैयार कर तर्कशील दृष्टिकोण का विकास किया जा सके।

विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी राष्ट्रीय शिक्षा नीति आयोग की अनुशंसाएँ (1986):-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मई 1986 में संसद द्वारा अपनाया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति आयोग की रिपोर्ट में इस बात को इंगित किया गया कि पाठ्यपुस्तकों की स्थिति असंतोषजनक है। पाठ्यपुस्तकों में संगठन व सामग्री की प्रस्तुति के तथा उनकी गुणवत्ता के उन्मुखीकरण में काफी सुधार की संभावना है। लेआउट, डिजाइन, चित्रण, पुस्तकों की बाईडिंग व विशेष रूप से उनकी प्रोद्योगिकी में भारी सुधार की संभावना है। नवाचार, पाठ्यक्रम विकास व प्रशिक्षण के क्षेत्र में अनुसंधान पद्धति द्वारा विशेष रूप से बड़े वित्त पोषित परियोजनाओं की आवश्यकता पर बल दिया गया। पाठ्यपुस्तकों व अन्य शिक्षण सामग्री को उत्पादन, वितरण में चरणबद्ध तैयारी की आवश्यकता हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तकनीकी विकेन्द्रित प्रणाली का समर्थन आवश्यक होगा साथ ही कार्यक्रमों के प्रसार और कार्यप्रणाली के मानकीकरण के लिए उचित लचिलापन अपनाना होगा। ‘‘एनसीईआरटी द्वारा निम्नलिखित पद्धति के दिशा निर्देशों के प्रचार-प्रसार शैक्षिक अधिकारियों के साथ सहयोग से किए गए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1988) की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी अनुशंसाएँ:-

‘‘भारतीय विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, और इसीलिए इस मुख्य क्षेत्र की शिक्षा पर ‘‘प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्याः एक रूपरेखा 1988’’ में विशेष बल दिया गया।’’

शिक्षक केन्द्रित दृष्टिकोण के स्थान पर छात्र-केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित प्रक्रियाओं के पाठ्यक्रम पर अधिक जोर दिया। विद्यालय पाठ्यक्रम, शिक्षार्थियों को ज्ञान प्राप्त अवधारणाओं को विकसित करने में सक्षम करने के उद्देश्य से होना चाहिए। साथ ही कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों और आदतों, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय वास्तविकताओं के साथ उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से होना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी अनुशंसाएँ:-

एनसीईआरटी ने राष्ट्रीय संकल्पों के अनुरूप संपूर्ण विद्यालयी शिक्षा के लिए नवीन पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित करने के लिए पाठ्यचर्या समूह गठित किया। आयोग ने माना कि विद्यालयी पाठ्यचर्या ऐसी हो, जिनसे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो, जिसमें खोज या अनुसंधान-भावना, समस्या हल, प्रश्न करने का साहस और वस्तुनिष्ठता जैसे गुण विद्यमान हों जो भ्रम, अंधविश्वास और भाग्यवाद को समाप्त

करने की दिशा में प्रवृत्त करे, इसके साथ ही साथ भारतीय परम्परा में रचे-बसे स्वदेशी ज्ञान को संपुष्ट करते हुए बनाये रखे। इसके लिए माध्यमिक शिक्षा के दौरान बडी संख्या में विद्यार्थियों को कार्य शिक्षा में उन्मुख करने के लिए उसे पाठ्यक्रम का अंग बनाने की जरूरत हो सकती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों संबंधी अनुशंसाएँ:-

देश के बच्चों को शिक्षित करने का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा के नाम पर जो हम अपने बच्चों को उपलब्ध करा रहे है, उसका समय-समय पर पुनरावलोकन हो। शिक्षा का मूल उद्देश्य है कि बच्चों को इतना सक्षम बनाया जाए कि वे जीवन का अर्थ समझ सके और अपनी योग्यताओं का विकास कर सके। अपने जीवन का एक उद्देश्य निश्चित करे और उसे प्राप्त करने का प्रयास करे तथा दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का अधिकार दे। उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हमारे बच्चों को क्या पढ़ाया जाए, इस ओर जनता का ध्यान ले जाने के लिए एनसीईआरटी ने सामाजिक विचार-विमर्श की एक प्रक्रिया शुरू की। विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम का लगातार विश्लेषण और संवर्धन एनसीईआरटी के नियमित कार्यों और उत्तरदायित्वों का हिस्सा हैं। यह कार्य परिषद् के उस मुख्य उद्देश्य को प्रतिबिम्बित करता है, जिसके तहत् वह शैक्षिक सुधारों और पाठ्यपुस्तक निर्माण के प्रति समर्पित शोध संस्थान के रूप में कार्य करती है।

शोध प्रश्न:-

इस अध्ययन के शोध प्रश्न निम्नानुसार है-

1.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति राजस्थान के अभिधारकों का निम्नांकित संदर्भ में प्रत्यक्षण क्या है?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के उद्देश्यों का विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में समावेश।

•पाठ्यपुस्तकों में उद्देश्याधारित विषयवस्तु ।

•विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण।

•अभ्यास एवं मूल्यांकन कार्य।

•भाषा शैली।

•पाठ्यपुस्तकों का भौतिक पक्ष।

2.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति उपरोक्त संदर्भ में अभिधारकों के प्रत्यक्षण का स्तर (उच्च/निम्न) क्या है?

शोध उद्देश्य:- प्रस्तुत शोध के निम्नाकिंत उद्देश्य निर्धारित किए गए-

1.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित माध्यमिक कक्षा की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति निम्नांकित संदर्भ में अभिधारकों का प्रत्यक्षण ज्ञात करना-

•राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के उद्देश्यों का विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में समावेश।

•पाठ्यपुस्तकों में उद्देश्याधारित विषयवस्तु ।

•विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण ।

•अभ्यास एवं मूल्यांकन कार्य।

•भाषा शैली।

•पाठ्यपुस्तकों का भौतिक पक्ष।

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति निर्धारित उपर्युक्त बिन्दुओं के संदर्भ में अभिधारकों के प्रत्यक्षण का स्तर ज्ञात करना।

3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रति निर्धारित उपर्युक्त बिन्दुओं के संदर्भ में आँकड़ों का गुणात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2009). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री सिद्धान्त''. आर. लाल बुक डिपो मेरठ पृ.1।
2. पारंकमलिल जॉन (2012): “Meaning, Nature and Aim of Education", B.Ed. Notes (26 March 2012)
3. र्मा, आर.एन. (2009). ''शिक्षा अनुसंधान'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 1
4. National Curriculum framework (2005) N.C.E.R.T. New Delhi